Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 8
कविता के बहाने - बात सीधी थी पर
कुंवर नारायण

कवि परिचय

कुँवर नारायण का जन्म सन 1927 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के फैजाबाद (वर्तमान अयोध्या) में हुआ। नयी कविता आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुँवर नारायण अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरा सप्तक के प्रमुख कवियों में रहे हैं। 2009 में भारत के साहित्य जगत् के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वे अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान को देखते हैं। उनका रचना-संसार व्यापक है। 1950 के आस-पास काव्य-लेखन की शुरुआत करने वाले कुँवर नारायण ने कविता के साथ साथ कहानियाँ, लेख व फिल्म समीक्षाएँ भी लिखीं। उनका कहना है- "कविता मेरे लिए कोई भावुकता की हाय-हाय न होकर यथार्थ के प्रति एक प्रौढ़ प्रतिक्रिया की मार्मिक अभिव्यक्ति है।"

उनके प्रमुख कविता-संग्रह हैं - चक्रव्यूह , परिवेश हम तुम, अपने सामने , कोई दूसरा नहीं व इनदिनों। आत्मजयी तथा वाजश्रवा के बहाने उनके दो खण्ड काव्य हैं। आकारों के आसपास इनका कहानी संग्रह है। इनके अलावा आज और आज से पहले नामक समीक्षा ग्रंथ भी लिखा। 2017में इनकी मृत्यु हो गयी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.'कविता के बहाने' कविता की तुलना किससे सार्थक मानी गई है-

(अ) चिड़िया की उड़ान
(ब) फूल का खिलना
(स) बच्चे का खेलना
(द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:(स)

प्रश्न 2. "करतब" शब्द में है-

(अ) प्रशंसा
(ब) निन्दा
(स) व्यंग्य
(द) उपेक्षा

उत्तर:(स)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने-का अभिप्राय क्या है?

उत्तर: इस कथन का अभिप्राय है कि चिड़िया की उड़ान सीमित क्षेत्र तक ही होती है, जबकि कविता का प्रभाव विश्वव्यापी होता है।

प्रश्न 2."सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: अभिप्राय यह है कि कविता का प्रभाव बच्चों के खेल की तरह भेदभावरहित और एकता का संदेश देने वाला होता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.'कविता के बहाने' शीर्षक कविता का उद्देश्य क्या है?

उत्तर :'कविता के बहाने' कविता के माध्यम से कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाएँगे। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो। कवि ने सारे बंधन तोड़ कर रचनात्मकता का संदेश दिया है।

प्रश्न 2.बिना मुरझाए कौन महकता है तथा क्यों?

उत्तर:बिना मुरझाए कविता महकती है क्योंकि एक कविता फूल की तरह कुछ क्षणिक आनंद वाली नहीं होती, बल्कि एक अच्छी कविता कई युगों-युगों तक अपनी सुगंध बिखेरती है। फूल कुछ समय के लिए खिलता है फिर मुरझा जाता है और इसके साथ ही उसकी सुगंध भी खत्म हो जाती है, परंतु कविता की संदेश रूपी सुगंध कभी भी समाप्त नहीं होती है। प्रत्येक देश काल और परिस्थिति में उसका संदेश बना रहता है। इसलिए कविता को बिना मुरझाए महकने वाली बताया गया है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.भाषा के चक्कर में सीधी-सी बात टेढ़ी हो जाती है। समझाइए।

उत्तर: जब हम अपनी बात को कहने के लिए पांडित्य पूर्ण अलंकारिक भाषा का प्रयोग करते हैं तो भाषा का सारा प्रभाव खत्म हो जाता है कविता के बाहरी रूप अर्थात् शिल्प पर अधिक बल देता है, तो कविता का सीधा-सादा कथ्य भी सहज रूप में पाठकों तक नहीं पहुँच पाता। भाषा की साज-सज्जा के चक्कर में कविता की आत्मा-बात-अनकही रह जाती है। कवि ने यही किया। वह अपनी बात या मनोभाव को अत्यन्त प्रभावशाली भाषा में प्रकट करने के चक्कर में फंस गया। भाषा के सुधार और बदलाव पर उसने जितना जोर दिया बात उतनी अस्पष्ट होती गई। भाषा को ही महत्व देने वाले लोगों के उकसाने में आकर स्थिति कवि के नियंत्रण से बाहर हो गई । अधीर होकर, बिना सोचे-समझे उसने बात को भाषा में बलपूर्वक स्थापित करने की कोशिश की और वह अपने उद्देश्य में विफल हो गया।

प्रश्न 2."कविता एक खेल है..... बच्चा ही जाने।" पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

उत्तर: इस कथन के द्वारा कवि बताना चाहता है कि कविता भी बच्चों के खेल की भाँति एक प्रकार का खेल ही है। बच्चे खेलते समय एक घर से दूसरे घर में बिना किसी झिझक और अपने-पराये का भेद किए खेलने जाते रहते हैं। उनके मन में कोई भेद-भाव नहीं होता। वे अपनी सुंदर क्रीड़ाओं से घरों को परस्पर जोड़ने का काम किया करते हैं। इस प्रकार, बच्चे मानवीय एकता के संदेशवाहक होते हैं।
इसी प्रकार, कवि कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं और कल्पनाओं से खेला करता है। उसकी कविता भी घर-घर में पहुँचती है और लोगों को आनंदित करती है। कविता का प्रभाव देश और काल की सीमाओं से परे होता है। कविता एक देश से दूसरे देश को जोड़ती है। कविता इस विश्वव्यापी प्रभाव की आनंद वे ही उठा पाते हैं, जो बच्चों के समान पक्षपातरहित और सरल हृदय हुआ करते हैं।

सप्रसंग व्याख्याएँ

कविता के बहाने

(1) कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर इस घर उस घर कविता के
पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया क्या जाने?

कठिन-शब्दार्थ- ***उड़ान*** = उड़ना, कल्पना। ***बहाने*** = प्रतीक बनाकर। ***कविता की उड़ान*** = कविता की असीम पहुँच या प्रभाव। ***क्या जाने*** = क्या समझ सकती है। ***बाहर-भीतर*** = थोड़ी दूर तक। इस घर उस घर = एक घर से दूसरे घर तक। ***कविता के पंख*** = कवि की कल्पनाएँ। ***माने*** = अर्थ।।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता ***'कविता के बहाने'*** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***कुँवर नारायण*** हैं। इस काव्यांश में कवि ने चिड़िया के बहाने से कविता की असीम उड़ान का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि जिस प्रकार चिड़िया उड़ान भरती है उसी प्रकार कविताएं भी उड़ान भरती है। चिड़िया एक घर से दूसरे घर बाहर भीतर चारों तरफ उड़ती रहती है, उसी प्रकार एक अच्छी कविता भी एक घर से दूसरे घर एक गांव से दूसरे गांव और एक देश से दूसरे देश तक पहुंच जाती है। लेकिन चिड़िया की उड़ान सीमित होती है, जबकि कविता की उड़ानें असीमित होती है। कविता की उड़ान के मायने (अर्थ) चिड़िया की उड़ान से अलग होते हैं

विशेष-

(i) कविता देशों और समय की सीमाओं को लाँघती हुई, जन-मन को प्रभावित करती रही है।

(ii) चिड़िया आकाश में अपने पंखों के सहारे एक सीमा तक ही उड़ती है परन्तु कविता कल्पना के सहारे लोगों के मन को गहराई तक छूती है। ***जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि*** की उक्ति चरितार्थ होती है।

(iii) काव्यांश की भाषा सरल, किन्तु अर्थ गांभीर्य लिए हुए है।

(iv) काव्यांश में 'कविता की उड़ान ..... क्या जाने' में वक्रोक्ति अलंकार है।'कविता के पंख लगाकर उड़ने' में मानवीकरण तथा रूपक है तथा 'बाहर-भीतर, इस घर उस घर में अनुप्रास अलंकार है।

2. कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर इस घर, उस घर बिना
मुरझाए महकने के माने फूल क्या जाने ?

कठिन-शब्दार्थ- ***खिलना*** = फूल का खिलना, कविता का आनंदमय प्रभाव। ***बाहर, भीतर*** = सीमित स्थान में, (कविता के पक्ष में), सर्वत्र। ***इस घर, उस घर*** = अपने देश में और विदेशों में। ***बिनामुरझाए*** = सदा एक जैसा आनंद देते हुए। ***महकना*** = (***फूल के पक्षमें***) सुगंध बिखेरना (***कविता के पक्ष में***) आनंदित करना, प्रभावित करना।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता ***'कविता के बहाने'*** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***कुँवर नारायण*** हैं। इस काव्यांश में कवि ने फूलों के खिलने और कविता के खेलने की तुलना करते हुए कविताकी महक को श्रेष्ठ सिद्ध करता है।

व्याख्या- कवि की क ल्पना, फूलों की तरह खिलती है ,लेकिन फूलों के खिलने की एक सीमा तो है ही, अतः फूल क्या जाने, फूल बगीचे को बाहर - भीतर , अलग - अलग उद्यानों को अपनी खुशबु से महकाते रहते हैं। फूल सुबह खिलता है, शाम को मुरझा कर गिर जाता है। वे एक निश्चित समय में खिलते हैं और ख़त्म हो जाते हैं। कविता फूल की तुलना में बिना मुरझाये लम्बे समय तक पाठकों के विचारों को महकाती रहती है, अतः फूल से कविता की तुलना नहीं की जा सकती है।

विशेष-

(i) फूल की महक अपने आस-पास के घरों के बाहर तथा भीतर लोगों को आनन्द देती है। उसकी महक दूर के स्थानों तक नहीं पहुँच पाती।

(ii) कविता की रसात्मकता समय बीतने पर नष्ट नहीं होती। कविता कभी पुरानी नहीं पड़ती, वह हर काल में लोगों को आनन्द देती है।

(iii) काव्यांश की भाषा सरल, किन्तु भाव की गहराई को छिपाए है।

(iv) काव्यांश में 'बिना मुरझाए महकने के माने' में अनुप्रास, खिलना' में यमक तथा 'कविता का ..... क्या जाने' में व्यतिरेक अलंकार है।

3. कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।

कठिन-शब्दार्थ- ***एक कर देना*** = भेद-भाव मिटा देना।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता ***'कविता के बहाने'*** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***कुँवर नारायण*** हैं। इस काव्यांश में कवि ने कविता को बच्चों के खेल की संज्ञा दी है। जिस प्रकार बच्चे सभी घरों को अपना समझते हैं। सभी से प्रेम करते हैं।उसी प्रकार कविता भी किसी से भेदभाव नहीं करती है।

व्याख्या- कहता है कि कविता बच्चों के खेल की तरह है। जिस प्रकार बच्चे कभी भी कही भी और किसी भी तरह खेलने लगते हैं। उसकी तरह कविता भी किसी भव- बन्धनों की सीमा को नहीं मानती है, बच्चे भी अमीर - गरीब, स्त्री - पुरुष ,जाति - रंग आदि का भेद भाव नहीं रखते हैं, अतः कवि भी अपने बात कहने भी किसी तरह की सीमा के बंधन में नहीं फंसते है। वे बच्चों की तरह सभी को साथ लेकर चलते है। वे सारे संसार को अपना मानता है, सबको आत्मीय मानते हैं।कविता का आनन्द देश-काल की सीमाओं में नहीं बँधता। सच्ची कविता सभी कालों में तथा सभी देशों में लोगों को प्रभावित करती है। दूरियाँ मिटाकर संसार में वास्तविक एकता कविता ही ला सकती है।

विशेष-

(i) बच्चे निष्पक्ष भाव से एक घर से दूसरे में खेलने चले जाते हैं, इसी प्रकार, एक अच्छी कविता भी बिना किसी पक्षपात के सभी का मनोरंजन करती है।

(ii) कविता से समाज और देशों को एक-दूसरे को समझने का अवसर देती है। उन्हें परस्पर मिलाती है।

(iii) काव्यांश की भाषा सरल है और प्रवाह पूर्ण खड़ी बोली हिन्दी है।

(iv) 'बाहर-भीतर', 'यह घर वह घर' तथा 'बच्चों के बहाने' में अनुप्रास अलंकार है।

बात सीधी थी पर

1. बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढ़ी हँस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा-पलटा
तोड़ा मरोड़ा।
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने।
या फिर भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।

कठिन-शब्दार्थ-बात = कथ्य, संदेश। ***सीधी*** = सरल। ***चक्कर*** = उलझन, इच्छा। ***टेढ़ी फंस गई*** = उलझ गई, अस्पष्ट होती गई। . ***उसेपाने*** = बात को स्पष्ट करने। ***उलट-पलटी*** = बदला। ***तोड़ा-मरोड़ा*** = नए-नए ढंग से कहना चाहा। ***घुमाया-फिराया*** = बदल-बदल

कर देखा। ***बने*** = स्पष्ट हो जाय। ***बाहर आए*** = भाषा की क्लिष्टता से मुक्त हो जाए। ***पेचीदा*** = पेंच के समान घुमावदार, अस्पष्ट।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है।इसके रचयिता कवि कुंवर नारायण हैं। कवि इस अंश में जान-बूझकर क्लिष्ट भाषा का प्रयोग करने वाले वक्ताओं पर व्यंग्य कर रहा है।

व्याख्या- कवि कहता है कि वह अपने मन के भावों को सहज रूप से अभिव्यक्त करना चाहता था, परंतु समाज की प्रकृति को देखते हुए उसे प्रभावी भाषा के रूप में प्रस्तुत करना चाहा। पर भाषा के चक्कर में भावों की सहजता नष्ट हो गई। कवि कहता है कि मैंने मूल बात को कहने के लिए शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों आदि को बदला। फिर उसके रूप को बदला तथा शब्दों को उलट-पुलट कर प्रयोग किया। कवि ने कोशिश की कि या तो इस प्रयोग से उसका काम बन जाए या फिर वह भाषा के उलट-फेर के जंजाल से मुक्त हो सके, परंतु कवि को कोई भी सफलता नहीं मिली। उसकी भाषा के साथ-साथ कथ्य भी जटिल होता गया।

विशेष-

(i) कवि ने भाषा की जटिलता पर कटाक्ष किया है।
(ii) सहज सरल भाषा के प्रयोग द्वारा भी कथन के भावों और विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित किया जा सकता है।
(iii) भाषा सरल, सहज साहित्यिक खड़ी बोली है।
(iv) भाषा के चक्कर में', 'टेढ़ी हँसना' तथा 'पेचीदा होना' आदि मुहावरों के प्रयोग से कवि ने कथ्य को प्रभावशाली बनाया है।
(v) 'उलट-पलटा', 'तोड़ा-मरोड़ा', 'घुमाया-फिराया' में अनुप्रास, 'साथ-साथ' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

2. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना।
मैं पेंच को खोलने के बजाये
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इसे करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबासी और वाह वाह।।
आखिरकार वही हुआ जिसको मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई।
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

कठिन-शब्दार्थ- मुश्किल = कठिनाई, मूल समस्या। ***खोलने*** = स्पष्ट करने। ***बेतरह*** = बिना सोचे-समझे, गलत ढंग से। ***कसता*** = और अस्पष्ट बनाता। ***करतब*** = दिखावट, तमाशा। ***तमाशबीन*** = तमाशा देखने वाले लोग। ***शाबासी*** = प्रोत्साहन। ***वाह-वाह*** = प्रशंसा। ***आखिरकार*** = अंत में। ***जोर-जबरदस्ती से*** = भाषा की अनावश्यक सजावट, क्लिष्टता। ***चूड़ी*** = पेंच के चक्कर, बात का मूल प्रभाव। ***मर गई*** = बेकार हो गई, बात प्रभावहीन हो गई। ***बेकार घूमने लगी*** = भाषा से पीछे रह गई, बेअसर हो गई।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है।इसके रचयिता कवि कुंवर नारायण हैं। कवि इस अंश में कवि क्लिस्ट शब्दों की कविता में अनुपयोगिता बता रहा है-

बहुत अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाने के चक्कर में कठिन भाषा का प्रयोग करने की भूल की। इससे कविता में निहित भाव अस्पष्ट हो गया। कवि ने इस कठिन समस्या पर धैर्यपूर्वक सोच-विचार नहीं किया। वह'बात' परभाषाके कसाव को ढीला करता, उसे सरल बनाता; वह उसे और अधिक कसता जा रहा था। कवि के इस प्रयास पर तमाशा देखने वाले लोग उसकी प्रशंसा और वाह-वाही कर रहे थे। इस शाबाशी से भ्रमित होकर कवि भाषा के पेंच को और कसता

जा रहा था। परिणाम यह हुआ कि कथन उसी प्रकार निष्प्रभावी हो गया जिस प्रकार पेंच को जबरदस्ती कसने पर उसकी चूड़ी मर जाती है और वह कसने के स्थान पर बेकार ही घूमने लगता है।।

विशेष-

(i) पाण्डित्यपूर्ण, क्लिष्ट भाषा में कहीगयीबात अपना संदेश पाठकों और श्रोताओं तक पहुँचाने में विफल रहती है।

(ii) कवि धैर्यपूर्वक सरलता से काम करने की सलाह दे रहा है।

(iii) 'पेंच कसने' के बिंब से कवि का कथ्य प्रभावी बना है।

(iv) कवि सरल शब्दों से मनचाहा अर्थ प्रकाशित कराने में कुशल है। भाषा मिश्रित शब्दावली युक्त है।

(v) लोकप्रिय उर्दू शब्दों-बेतरह, करतब, तमाशबीन, साफ़ आदि का सुंदर प्रयोग है।

(vi) 'बात की चूड़ी' में रूपक तथा साफ सुनाई, जोर जबरदस्त में अनुप्रास और पेंच को कसने की प्रक्रिया के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने से, पूरे काव्यांश में सांगरूपक अलंकार है।

(vii) मुक्तक छंद है।

3. हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक-ठाक
पर अन्दर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत!
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा"
क्या तुमने भाषा को।
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?"

कठिन-शब्दार्थ- हार कर = कोई अन्य उपाय न होने पर। ***कील की तरह*** = बेढंगे रूप में, बलपूर्वक। ***ठोंक दिया*** = क्लिष्ट भाषा में ही प्रकाशित कर दिया। ***ऊपर से =*** देखने-सुनने में, बाहरी रूप में। ***ठीक-ठाक*** = सही लगना। ***कसाव***= मजबूत पकड़। ***ताकत*** = प्रभावशीलता। ***शरारती*** = चंचल, तंग करने वाला। ***खेलना*** = मजाक बनाना, हँसी उड़ाना। पसीना पोंछना = घबराना, निराश हो जाना। ***सहूलियत से*** = सुविधापूर्वक, सरल भाव से। ***बरतना*** = काम में लेना।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक ***सृजन*** में संकलित कविता ***'बात सीधी थी पर'*** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***कुंवर नारायण*** हैं। कवि इस अंश में कवि कहता है कि बात को जोर-जबरदस्ती से कठिन भाषा में ठोंक देने से वह प्रभावहीन हो जाती है। सरल भाषा में भी मार्मिक भावाभिव्यक्तिकी जा सकती है।

व्याख्या- कवि जब अपनी बात को स्पष्ट नहीं कर सका तो उसने अपनी बात को वहीं पर छोड़ दिया जैसे पेंच की चूड़ी समाप्त होने पर उसे कील की तरह ठोंक दिया जाता है। ऐसी स्थिति में कवि की अभिव्यक्ति बाहरी तौर पर कविता जैसी लगती थी, परंतु उसमें भावों की गहराई नहीं थी, शब्दों में ताकत नहीं थी। कविता प्रभावहीन हो गई। जिस प्रकार पेंच की चूड़ी मरने से वह ऊपर से तो ठीक लगता हैपरन्तु अन्दर से उसकी पकड़ में मजबूती तथा कसाव नहीं होता। ठीक इसी प्रकार क्लिष्ट भावहीन भाषा में व्यक्त मनोभावों में सौन्दर्य, आकर्षण तथा पाठक को प्रभावित करने की शक्ति नहीं होती। अपनी असफलता पर कवि निराश था और बेचैन होकर बार-बार पसीना पोंछ रहा था। यह देखकर उसके मन के भाव किसी शरारती बच्चे की तरह उसे छेड़ने लगे। उन्होंने कवि से पूछा कि क्या वह अभी तक सरल भावों की व्यंजना के लिए सरल, सुबोध भाषा का प्रयोग नहीं सीख पाया है? सरल भाषा अभी तक के प्रयोग से भी श्रेष्ठतम भाव व्यक्त किए जा सकते हैं।।

विशेष-

(i) कवि ने कविताओं की आडंबरपूर्ण भाषा पर व्यंग्य किया है।

(ii) 'कील की तरह', 'शरारती बच्चे की तरह' में उपमा अलंकार है।

(iii) 'जोर-जबरदस्ती', 'पसीना पोंछते' में अनुप्रास तथा 'बात की चूड़ी' में रूपक अलंकार है।

(iv) 'कील की तरह ठोंकना' भाषा को जबरदस्ती जटिल बनाने का परिचायक है।

(v) काव्य की भाषा में उर्दू शब्दों का मुक्त भाव से प्रयोग हुआ है।

(vi) काव्यांश में "कील की तरह ..... ठोंक दिया" तथा "बात ने ..... खेल रही थी" में उपमा अलंकार तथा मानवीकरण अलंकार भी है।

(vii)मुक्तक छंद है।

(viii)काव्यांश में खड़ी बोली का प्रयोग है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg